अध्यात्म ज्ञान एवं चिन्तन संस्था
(SOCIETY FOR ADHYATMA STUDIES)

17, सिविल लाइन्स, कमिश्नर ऑफिस के सामने, मुरादाबाद – 244001
मो0 9412241221

हिन्दू धर्म के अद्वितीय सिद्धांत

भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम जीवित सभ्यता है। इस सभ्यता का प्रारम्भ कब हुआ यह एक शोध का विषय है। कुछ विद्वानो के अनुसार यह सभ्यता 20,000 वर्षों से भी अधिक पुरानी है। इस सभ्यता का एक विशिष्ट जीवन दर्शन है जो जीवन में सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त करने का मार्ग बताता है। इस जीवन दर्शन में धर्म का अर्थ जीवन धारण करने का तरीका है। यः धारयति स धर्मः – अर्थात जो जीवन को धारण करता है वह धर्म है। जिसका अर्थ है कि जीवन को जीने के लिए जो क्रियाकलाप हम अपनाते हैं वह ही धर्म है। यह दर्शन हमारे शास्त्रों में वर्णित है जिनमें मुख्य 4 वेद, 220 उपनिषद, 6 दर्शन शास्त्र, 18 पुराण, रामायण, महाभारत, श्रीमद् भगवद् गीता आदि हैं। क्योकि यह पता नही है कि यह जीवन दर्शन कब प्रारम्भ हुआ इसलिए हम इसे सनातन धर्म कहते हैं। किसी भी शास्त्र मे हिन्दू शब्द वर्णित नहीं है। इस शब्द की उत्पत्ति तब हुई जब यूनान के सम्राट सिकन्दर की सेना हमारे देश पर आक्रमण करने के लिए सिन्धु नदी के तट पर पहुँची। वे लोग सिन्धु न बोल पाए और हिन्दु कहने लगे और तब से इस पूरे देश में रहने वाले व्यक्ति हिन्दू कहलाने लगे और यह देश हिन्दुस्तान कहलाने लगा और कालान्तर में इस भूखण्ड के निवासियों के द्वारा पालन किए जा रहे सनातन धर्म को हिन्दू धर्म की संज्ञा दे दी गई।

विश्व के विभिन्न भू–भागों में विभिन्न संप्रदायों और समाजों द्वारा विभिन्न धर्मों का पालन किया जाता रहा है। उनके अध्धयन से पता चलता है कि सभी धर्मों में ऐसे सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं जो समाज की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। सभी धर्मों में ईश्वर को इस संसार का बनाने वाला व पालन करने वाला बताया गया है तथा मानवों को ईश्वर की संतान होना माना गया है। सभी धर्मों में मानव मात्र में आपसी भाईचारा, प्रेम, सद्भावना, सहिष्णुता, दान आदि को महत्व दिया गया है। लेकिन हिन्दू धर्म में कुछ ऐसे अद्वितीय सिद्धांत हैं जो अन्य धर्मो में नहीं पाए जाते। वे अद्वितीय सिद्धांत संक्षेप में निम्न प्रकार हैं:–

- **एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति**
  केवल एक ब्रह्म ही है उसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। एक ही ईश्वर होने का सिद्धांत विश्व के सभी बडे धर्मों में है परन्तु हिन्दू धर्म में यह कुछ अलग ही है। हिन्दू धर्म के अनुसार एक ब्रह्म है और वह कण–कण में व्याप्त है। वह सम्पूर्ण चल और अचल, जड और चेतन जगत में व्याप्त है। बाकी सब उसी का भाग है। एक प्रकार से आधुनिक विज्ञान भी इस सिद्धांत को स्वीकार करता है जिसमें प्रत्येक जड़–चेतन वस्तु एटमों से बनी हुई मानी गई है।

- **आत्मा**

  आत्मा के अस्तित्व का सिद्धांत किसी भी अन्य धर्म में नही है। हिन्दू धर्म के अनुसार आत्मा ही वह शक्ति है जिसके रहने पर शरीर जीवित रहता है और जिसके निकल जाने पर शरीर निर्जीव हो जाता है। यह आत्मा ईश्वर का भाग है, ईश्वर से आता है और ईश्वर में ही विलीन हो जाता है। यह आत्मा अमर है।

- **पुनर्जन्म**

  यह सिद्धांत भी हिन्दू धर्म के अतिरिक्त अन्य किसी धर्म में नही पाया जाता है। पुनर्जन्म का अर्थ आत्मा का एक शरीर से निकलने के उपरान्त दूसरे शरीर में प्रवेश करना है। इसके अनुसार आत्मा जन्म के समय शरीर में प्रवेश करता है और मृत्यु के समय शरीर त्यागकर दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाता हैं और उसका पुनर्जन्म होता है। यह पुनर्जन्म का चक्र चौरासी लाख योनियों तक चलता है जिसके पूरा होने पर आत्मा ईश्वर में विलीन हो जाता है। कुछ धर्मो मे यह माना गया है कि मृत्यु के बाद निर्णय के दिन सभी मृत व्यक्ति पुनः जीवित हो जाऐंगें और उन्हें उनके कर्मो के अनुसार स्वर्ग अथवा नर्क में रहने के लिए भेज दिया जाएगा। यह सिद्धांत पुनर्जन्म के सिद्धांत से बिल्कुल अलग है।

- **मोक्ष – अर्थात पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति**

  जब चौरासी लाख योनियों तक चलने वाला पुनर्जन्म का चक्र समाप्त हो जाता है और आत्मा का परमात्मा में विलय हो जाता है उस स्थिति को मोक्ष कहते है। परन्तु कुछ योगी, ज्ञानी और भक्त अपने योग से तथा ईश्वर की कृपा से इस जन्म–मृत्यु के चक्र से पहले ही छुटकारा पाने में समर्थ हो सकते हैं – वही मोक्ष है।

- **प्रारब्ध – अर्थात पूर्व जन्मों के संचित कर्मों का प्रभाव**

  इस सिद्धांत के अनुसार जब आत्मा एक के बाद दूसरे जन्मों में प्रवेश लेता है तब प्रत्येक जन्म में उसके द्वारा किए गए कर्म संचित होते रहते हैं और अच्छे या बुरे कर्मों का फल अगले जन्मों में भुगतना पड़ता है। इसी का दूसरा पक्ष यह भी है कि संचित कर्मों के अनुसार ही अगली योनियाँ प्राप्त होती हैं।

- **ईश्वर प्राप्ति**

  हिन्दू धर्म के अनुसार ईश्वर की प्राप्ति अथवा उसकी अनुभूति संभव है। शास्त्रों मे ईश्वर प्राप्ति के विभिन्न मार्ग बताए गए हैं उनमें प्रमुख हैं – राज योग, ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग, मन्त्र योग, तन्त्र योग, क्रिया योग, कुण्डलिनी योग आदि। इन सभी मार्गों में मूल तत्व ध्यान है। ध्यान द्वारा हम चित्त को उद्वेलित करने वाले विचारों, भावनाओं और इच्छाओं को समाप्त कर सकते है। इनकी समाप्ति पर चित्त निर्मल हो जाता है। और केवल तभी ईश्वर की अनुभूति संभव है।

- **ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या**

  इस सिद्धांत का अर्थ है कि केवल ईश्वर ही सत्य है, वही अमर है बाकी सम्पूर्ण जगत नाशवान है और मिथ्या है। और नाशवान विषयों के प्रति कोई भी लगाव रखना व्यर्थ है।

- **ईश्वर के अवतार**
  ईश्वर के द्वारा अवतार लिए जाने का सिद्धांत हिन्दू धर्म की ही विशेषता है। विश्व के उत्थान के लिए और दुष्टों के विनाश के लिए ईश्वर अवतार लेता है। ईश्वर मानव, पशु, अन्य जीव अथवा प्राकृतिक शक्तियों के रुप में प्रस्फुटित होता है।

- **खुला धर्म**
  हिन्दू धर्म किसी एक पुस्तक विशेष या व्यक्ति विशेष के कथनों पर आधारित नही है बल्कि इस धर्म के सिद्धांत हजारों ऋषियों–मुनियों के द्वारा अपने पूरे–पूरे जीवन समर्पित करके अनुभूत किए गए जीवन दर्शन और सम्पूर्ण आनन्द प्राप्ति के मार्गों पर आधारित हैं। यह ज्ञान हमारे विभिन्न शास्त्रों में वर्णित है, किसी एक पुस्तक पर आधारित नहीं है। साथ ही हिन्दू धर्म की यह भी विशेषता है कि इसमें धर्म के विभिन्न सिद्धांतो पर वाद–विवाद एवं शास्त्रार्थ किया जाना सम्भव है। विपरीत विचारों का भी स्वागत किया जाता है। औचित्यपूर्ण नया विचार भी स्वीकार किया जाता है।

- **वसुधैव कुटुम्बकम्**
  अर्थात सारी वसुधा ही हमारा कुटुम्ब है। संसार में रहने वाले सभी मानव अथवा मानव से अलग प्राणी पशु–पक्षी आदि हमारे कुटुम्ब के ही सदस्य हैं। हमारे धर्म से अलग धर्मों को मानने वाले दूसरे धर्मों के व्यक्ति भी उसी ईश्वर के भाग हैं तथा हमारे लिए उतने ही प्रिय हैं।

- **विस्तार अस्वीकार्य**
  किसी भी व्यक्ति को तलवार के जोर पर अथवा रुपये के बल पर हिन्दू बनाया जाना स्वीकार्य नहीं है। हिन्दू धर्म में विस्तार का कोई विचार नहीं है।

- **कर्म की स्वतन्त्रता**
  हिन्दू धर्म में प्रत्येक व्यक्ति को कर्म करने की स्वतन्त्रता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने ज्ञान, बुद्धि और विवेक के अनुसार कर्म कर सकता है। लेकिन कर्म फल उसे भोगना ही होगा।

- **पूजा–पद्धति की स्वतन्त्रता**
  इस धर्म में कोई सार्वभौम पूजा–पद्धति नहीं है बल्कि प्रत्येक व्यक्ति जिस प्रकार चाहे पूजा करने के लिए स्वतन्त्र है। पूजा की बहुत सी पद्धतियां हिन्दू धर्म में प्रचलित हैं। उनमें से कोई भी पद्धति चुनने के लिए व्यक्ति स्वतन्त्र है और यदि वह पूजा नहीं करना चाहता है तब भी कोई आपत्ति नहीं है।

- **चार लक्ष्य**
  धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में इन चारो लक्ष्यों की पूर्ति के लिए कार्य करना है। जो इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए कार्य नहीं करता है उसका जीवन व्यर्थ है।

निवेदक

सुधीर गुप्ता
एडवोकेट